पढ़ाई बच्चों के लिए बहुत सहज है। कोई साधु–संत भी नहीं हैं। बड़ी बाप है,मां है। यह जैसे परिवार है। ऐसा परिवार कोई होता नहीं है। ईश्वरीय परिवार है यह तो विश्व के मालिक हो गए। ईश्वर कोई विश्व का मालिक है नहीं ;परंतु कहा जाता है मालिक है। तो तुम बच्चे भी विश्व के मालिक हो। मालिकों को खुशी होनी चाहिए। खुशी क्यों नहीं रहती? क्योंकि याद की यात्रा में नहीं रहते। समझते भी हैं कि हम उंच ते उंच इम्तिहान पढ़ते हैं। अल्फ,बे पढ़ते हैं तो पटी पर स्लोट पर लिखते हैं। तुमको तो स्लेट पर लिखने का है नहीं ;परंतु औरों को पढ़ाना होता है इसलिए नोट करती हो। दूसरा स्कूल और कोई नहीं है जो पढ़कर फिर दूसरों को पढ़ाये। तुम सबको पढ़ाते हो। सबका हक है। यह नालेज बहुत सहज है। कलियुगी मनुष्य बुलाते रहते हैं। यहां तुम बाप से पढ़ रहे हो। तुम अच्छी रीत समझते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बाप से पढ़ना है। बाप से प्यार से मिलना है। टीचर से पढ़ना है। गुरू से याद भी सीखना है। बहुत सहज है। बच्चों को खुशी बहुत होनी चाहिए। खुशी है भविष्य खजाने की। बहुत खुशी होनी चाहिए। टीचर तो सबको एक जैसा ही पढ़ाते हैं। पढ़ाई की बहुत2 खुशी होनी चाहिए। तुम जानते हो कि यह कमाई ऐसी है हम सच्च सच पदमपति बन रहे हैं। तुम सबको सच बताते हो। यह गीता का भगवान वाला चित्र बहुत अच्छा है। कई बच्चे डरते हैं। समझते हैं कि यह तो पत्थर मारना है। गीता को भी खंडन किया हुआ है। उंच ते उंच शास्त्र है गीता। वो खंडन की हुई है। तो उनको सिद्ध करना चाहिए ;परंतु अच्छे2 महारथी डरते हैं। विनाशकाले विपरीत बुद्धि वाला चित्र भी बनवाया था। तो बाबा ने लिखा था कि कांग्रेस कुरू कौरव सब अक्षर लिख डालो तो कोई इनमें भी डरते थे। तुम बच्चे जानते हो तुम्हारे लिए कोई उल्टा–सुल्टा बोलेंगे तो बहुत पछताना पड़ेगा। देखेंगे यह तो भारत को स्वर्ग बना रही है। तुमको हमने कम–जास्ती बोला ;किंतु आवेंगे जरूर। यह तो मातायें भारत की बहुत उंच सेवा कर रही हैं। तुम कोई मनुष्य के मत पर नहीं हो। यह अपने को भगवान नहीं कहते हैं। भगवान तो उंच ते उंच निराकार है। वो ही पतित–पावन है। कहते हैं कि देह के सब धर्म को छोड़ मामएकम् याद करो। इसमें डरने की भी बात नहीं है। नहीं गी....सप्ताह चलाय कैसे सकेंगे? बाबा लिखते हैं नहीं तो तुम बताओ कैसे लिखें? डरने की तो बात ही नहीं है। कराची में वजीरों आदि के आगे बुलाते थे। कोई से डरती ना थी। बहुत नशा था। यह कौन है, जो हमको बाप से छुड़ाते हैं। बाप ऐसा नहीं करावेंगे जिसमें डरने की बात हो। एक2 चित्र बड़ा क्लीयर....और भी चित्र भी निकाले तो हो सकता है कहा जाता है कि सच तो बिठो नच तो तुम बच्चों को करना ... है। समझते भी हो कि हम बेहद बाप के सन्मुख बैठे हैं। हम नई दुनियां के मालिक बनते हैं। कितनी खुशी होनी चाहिए। मूंझने की तो दरकार ही नहीं। मूंझेंगे वो इस ज्ञान को ना समझते हैं और ना समझा सकते हैं। तुम देख रहे हो कोई समण(समझ) सकते हैं; परंतु फिर कैरेक्टर नहीं है। जिस कारण सेंटर पर कोई भी पसंद नहीं करते हैं। बाबा नाम भी बतावेंगे कि इन2 को फलानी जगह पर भेजा, स्टुडेंट पसंद नहीं करते हैं तो बाप को चेंज करना पड़ता है ;क्योंकि रिपोर्ट्स आती है। कोई समय नाम भी देना पड़ेगा। कोई पसंद ना करेंगे तो फिर है मधुबन। बाप सहन कर सकते हैं बच्चे सहन नहीं कर सकते। तो उछल पड़ते हैं, लिखते हैं कि हमको फलाना टीचर ना चाहिए। यह टीचर तो मैजॉरिटी जब.....है तो तब बाबा चेंज करते हैं। विवेक कहते हैं कि बच्चों को तो खुशी का पारावार ना होना चाहिए। सदैव हर्षित.....। आपस में भी बहुत मीठे। तुम बादशाहों से भी बड़े बादशाह हो। इन ल.ना. से भी बड़े हो। बाप बच्चों की महिमा करते हैं। तुम देवताओं से भी इस समय उंच हो। चोटी उपर है या सिर उपर है? तुम बहुत बड़े हो। बाप ही तुमको पढ़ाते हैं। तुम बेहद बाप के बच्चे बहुत उंच ते उंच हैं। अंदर में ऐसा नशा होना चाहिए कि हम ब्राह्मण सबसे उंच हैं। तो हमारी चलन भी ऐसी होनी चाहिए यह समझते भी हैं कि भगवान पढ़ाते हैं। हम पढ़ते नहीं हैं। हमारा कर्म ऐसा खोटा जो बाप पढ़ाते हैं तो हम धारण नहीं कर सकते हैं। फिर भविष्य में हमारा

क्या होगा ;परंतु पत्थरबुद्धि होने कारण समझते नहीं हैं। दिल खाती भी होगी शिवबाबा कहते हैं कि सर्विस करो। हम सीखे ही नहीं हैं। तो हमको क्या मिलेगा?कुछ भी विचार नहीं चलता है। ऐसे के ऐसे ही रह जावेंगे। स्कूल में टीचर को खयाल रहेगा ना। पुरुषार्थ करने वाले करते हैं। कोई नहीं करते हैं। खुद भी समझते हैं कि हमारी जो इस समय चलन है इनसे उंच नहीं बन सकेंगे। एक कान से सुना फिर दूसरे से खलास हो जाता। बाप समझते हैं कि नम्बरवार पतित हैं। जितना देरी से आते हैं उतना कम नम्बर। हिसाब किया जाता है। अजामिल भी है। साधु–संत महात्मा जो ठिक्कर–भित्तर में कह देते हैं। वो भी अजामिल मिसल है। यह तो दुनिया हर अजामिलों की है। तमोप्रधान हो गई है। सन्यासी तो सन्यास कर पवित्र बनते हैं। विचार करना चाहिए कि हम अपना कल्याण तो करें। यह इतना उंच बनते हैं और हम ऐसे हैं?सो भी कल्प कल्पांतर। रात को नींद भी फिट जानी चाहिए। बाप को याद करें और फिर माला के नजदीक पिरोये जावें। स्कॉलरशिप ले लेवं। इसको कहा जाता है कि अपने उपर रहम करना। रहमदिल को बुलाया वो तो समझाते हैं ;परंतु समझते नहीं हैं। तो रहम पड़ता है। कल्प कल्पांतर इनकी यही हालत होगी। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रुहानी बाप वा दादा का यादप्यार और गुडनाइट।

<u>पत्र की कॉपी 30.11.67</u> मुजफ्फरपुर निवासी सभी रुहानी नूरे रत्नों,सभी महावीरनी शक्तियों को बहुत यादप्यार। बहुत हुल्लास से सर्विस की है। कुछ हंगामा भी हुआ है। एक दिन सभी आय कर पूंछ लटकायेंगे। मुजफ्फरपुरनिवासी अच्छा शो कर रहे हैं। भल नेपाल में भी जा सकते हैं। चित्रों सहित चित्र जरूरी ले जा सकते हैं। शायद ठंडी में मेला भी लगता है। वहां क्षीर सागर और विश्व सागर का अर्थ समझाना और सिर्फ निराकार शिवबाबा को याद करने से पतित से पावन होकर विष्णुपुरी में जा सकते हैं। अब तो पुरुषोत्तम संगमयुग है। कायदे अनुसार समझाना है पुरुषोत्तम संगमयुग पर। कल्प के रात–दिन का पुरुषोत्त्म संगमयुग है। बेहद के बाप से वर्षा पाना है। बेहद स्वर्ग के सुख का तो तो पा लो और पूरा समझाना है कि यह हठयोगी सन्यासी वा मनुष्य मात्र ये रुहानी शिक्षा विश्व के आदि,मध्य और अंत ड्यूरेशन को कोई और जान ना सके। तो यह नालेज और कोई दे ना सकता है। चित्र मुख्य विनाशकाले विपरीत बुद्धि। सीढ़ी तो जरूरी समझानी के चित्र हैं। सो ले जाना है। जो जिस समय स्थापन करते हैं। सो फिर उसी समय स्थापना करने आते हैं। परमपिता तो आते ही हैं। पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं। पुरानी दुनियां का विनाश और नई दुनियां की स्थापना करने आते हैं। सभी की(को) पुरुषोत्तम संगमयुग पर खड़ा कर खूब अच्छी रीत से समझाना है और बाप कहते हैं कि भगवानोवाच देह सहित देह के सभी सम्बंधों को छोड़ एक की याद में रहो। देहधारियों को छोड़ विदेह शिवबाबा को याद करो। स्वयं शिवबाबा कह रहे हैं कि जिस शरीर का आधार लेता है वो अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। इसने ही पूरे 84जन्म लिए हैं। 84जन्मों के अंत के भी अंत वाणप्रस्थ अवस्था में इनका आधार लिया है प्रजापिता नाम से ;क्योंकि यज्ञ के लिए ब्राह्मण चाहिए। प्रजापिता ब्रह्मा भी चाहिए, जिनकी मुखवंशावली को प्रजापिता ब्रह्माकुमार कुमारियां कहा जाता है और इस सम्बंध से क्रिमिनल आंखें धोखा ना देंगी। आपस में प्रजापिता ब्रह्माकुमार कुमारियां समझने से पुरुषोत्तम संगमयुग पर। प्रजापिता ब्रह्माकुमार मुखवंशावली ही सर्वोत्तम कुल गाया गया है। बाद में देवी–देवता ,क्षत्रिय ,वैश्य,शूद्र। ब्राह्मण ही स्वदर्शन चक्रधारी अर्थात् सारी सृष्टि चक्र के आदि,मध्य और अंत को परमपिता द्वारा जान मनुष्य से देवता फिर क्षत्रिय,वैश्य ,शूद्र हम सो ब्राह्मण ,हम सो देवता,हम सो क्षत्रिय,हम सो वैश्य ,हम सो शूद्र ऐसे सीढ़ी उतरते हैं और एक ही पुरुषोत्तम संगमयुग पर। शिवबाबा की याद में रहने से विकर्म सभी विनाश हो जाते हैं और विश्व का मालिक बन जाते हैं। यूं भी भारत में देवी देवता राज्य होता है। ऐसे पहले ज्ञान आधा कल्प ,फिर आधा कल्प भक्ति। फिर संगमयुग पर ज्ञान से पवित्र बन विश्व का मालिक बनते हैं। इनको हार–जीत को ड्रामा वा साल्वेंट इनसाल्वेंट वा नई दुनियां ,पुरानी दुनियां का चक्र चलता है। ओमशांति